भारत सरकार
रेल मंत्रालय

लोक सभा
06.08.2025 के
अतारांकित प्रश्न सं. 2984 का उत्तर

ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल मार्ग का विस्तार

2984. श्री अनिल बलूनी:

क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल मार्ग का निर्माण कार्य कब तक पूरा होने की संभावना है; और

(ख) क्या सरकार का उक्त रेल मार्ग का विस्तार करने का विचार है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

रेल, सूचना और प्रसारण एवं इलेक्ट्रोनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री
(श्री अश्विनी वैष्णव)

(क) और (ख): ऋषिकेश-कर्णप्रयाग नई रेल लाइन परियोजना (125 किमी) भारतीय रेल की एक प्रतिष्ठित परियोजना है जो पूर्ण रूप से उत्तराखंड राज्य में स्थित है। यह हिमालय के दुर्गम भूवैज्ञानिक और चुनौतीपूर्ण भूभाग से होकर गुजरती है। इस परियोजना का उद्देश्य उत्तराखंड में संपर्कता में बदलाव लाना है।

यह परियोजना उत्तराखंड के देहरादून, टिहरी गढ़वाल, पौड़ी गढ़वाल, रुद्रप्रयाग और चमोली जिलों से होकर गुजरती है और देवप्रयाग तथा कर्णप्रयाग जैसे धार्मिक और पर्यटन स्थलों को ऋषिकेश और भारत की राष्ट्रीय राजधानी से रेल संपर्क मुहैया कराएगी।

इस परियोजना का संरेखण मुख्यतः सुरंगों से होकर गुज़रता है। इस परियोजना में 105 कि.मी. लंबी 16 मुख्य लाइन सुरंगें, लगभग 98 कि.मी. लंबी 12 बचाव सुरंगें और 10 कि.मी. प्रवेश मार्गों/क्रॉस मार्गों का निर्माण कार्य शामिल है। अभी तक, 13 मुख्य लाइन सुरंगों और 9 बचाव सुरंगों का निर्माण कार्य पूरा किया जा चुका है।

कार्यों की प्रगति बढ़ाने के लिए, विभिन्न सुरंगों में 08 प्रवेश मार्गों की भी पहचान की गई। इन प्रवेश मार्गों द्वारा सुरंग खुदाई के अतिरिक्त कार्यक्षेत्रों का निर्माण किया गया जिससे लंबी सुरंगों के निर्माण कार्य को शीघ्र पूरा करने में तेज़ी आई। सभी 8 प्रवेश मार्गों का कार्य भी पूरा किया जा चुका है।

तदनुसार, कुल 213 किलोमीटर की सुरंग निर्माण परियोजना में से 199 किलोमीटर सुरंग निर्माण कार्य पूरा किया जा चुका है।

भारतीय रेल में पहली बार, हिमालयी भूविज्ञान में सबसे लंबी सुरंग (टी-8), जो 14.8 किलोमीटर लंबी है, के निर्माण कार्य को तेजी से पूरा करने के लिए सुरंग खुदाई मशीन (टीबीएम) का उपयोग किया गया। सुरंग खुदाई मशीन के द्वारा ट्विन सुरंगों का निर्माण कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया है।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि पारितंत्र और आसपास के वातावरण को न्यूनतम हानि हो, सुरंग निर्माण कार्यों को सभी सावधानियों और नवीनतम प्रौद्योगिकियों के साथ किया जा रहा है।

किसी भी रेल परियोजना का पूरा होना राज्य सरकार द्वारा शीघ्र भूमि अधिग्रहण, वन विभाग के अधिकारियों द्वारा वन संबंधी स्वीकृति, लागत साझेदारी परियोजनाओं में राज्य सरकार द्वारा लागत में हिस्सेदारी जमा करना, परियोजनाओं की प्राथमिकता, अतिलंघनकारी जनसुविधाओं की शिफ्टिंग, विभिन्न प्राधिकरणों से सांविधिक स्वीकृतियां, क्षेत्र की भूवैज्ञानिक और स्थलाकृतिक स्थितियां, परियोजना(ओं) के क्षेत्र में कानून एवं व्यवस्था की स्थिति, जलवायु परिस्थितियों के कारण परियोजना स्थल विशेष के लिए वर्ष में कार्य करने के महीनों की संख्या आदि जैसे विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है।

गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ को भारतीय रेल से जोड़ने के लिए चारधाम परियोजना के अंतिम स्थान निर्धारण सर्वेक्षण का कार्य पूरा हो चुका है। परियोजना के दो संरेखण हैं (i) डोईवाला-उत्तरकाशी-बड़कोट जो यमुनोत्री और गंगोत्री तीर्थस्थलों को सेवित करेंगे

(ii) कर्णप्रयाग-साईकोट-सोनप्रयाग-जोशीमठ केदारनाथ और बद्रीनाथ तीर्थस्थलों को सेवित करेंगे।

विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार होने के बाद, परियोजना की स्वीकृति के लिए राज्य सरकारों सहित विभिन्न हितधारकों के साथ परामर्श और अपेक्षित अनुमोदन जैसे नीति आयोग, वित्त मंत्रालय आदि से मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। चूंकि परियोजनाओं की स्वीकृति एक सतत और गतिशील प्रक्रिया है, इसलिए निश्चित समय-सीमा तय नहीं की जा सकती।

*****